महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय, कोट्टयम की पीएच.डी की उपाधि के लिए प्रस्तावित शोध विषय की अंतिम रूपरेखा

मेहरुन्निसा परवेज़ की कहानियों में समकालीन स्त्री संकल्पनायें

समकालीन कहानी मानव मन को सर्वाधिक प्रभावित करनेवाली साहित्यिक विधा है। कहानी मूलतः संघर्षशील होने के कारण युग जीवन से टकराती और समझौता करती हुई परिपक्वता की ओर बढ़ती रहती है। सामाजिक संघर्षों के परिष्कार का प्रयास भी इस विधा का मूल उद्देश्य है। आधुनिक हिन्दी कहानी में अनेक विधाओं का प्रारंभ पाश्चात्य प्रभाव से हुआ, किन्तु कहानी के साथ यह शायद पूर्ण सत्य नहीं है। क्योंकि भारत में कहानी की एक समृद्ध परम्परा भारतीय साहित्य में मिलती है। 'पंचतन्त्र' और 'कथा सरित्सागर' जैसे ग्रन्थों में भी हिन्दी कहानी की जडें मिलती हैं। हिन्दी कहानी का आरंभ साहित्यकारों की दृष्टि में इंशा अल्ला खाँ के 'रानी केतकी की कहानी' (1901) या रामचन्द्र शुक्ल के 'ग्यारह वर्ष का समय' (1903) से होता है।

हिन्दी कहानी साहित्य को अध्ययन की सुविधा के लिए (1) प्राचीन युग (2) प्रारंभिक युग या भारतेन्दु युग (3) प्रेमचन्द - प्रसाद युग (4) स्वातन्त्र्योत्तर युग (5) नयी कहानी आदि नाम दिए गए। इस प्रकार के काल-विभाजन से किसी भी युग या काल का अचानक परिवर्तन नहीं हो जाता। यह एक दूसरे से अनुबद्ध है और एक का प्रभाव दूसरे पर अवश्य पड़ता रहता है। काल विभाजन अध्ययन की सुविधा के लिए ही अधिक प्रमाणिक सिद्ध होता है। यह सिर्फ कहानीकारों की जीवनियों के बारे में पता लगाने या रचना शैली का ज्ञान पाने के लिए नहीं है।

नई कहानी, आधुनिक कहानी के रूप में जब बदल गयी तब आधुनिकता चुनौती के रूप में सामने आयी। यह आधुनिकता पहले प्रयोगशील तथा नयी कविता में खोजी गयी

अब आज की कहानी इसकी अभिव्यंजन कर रही है। इसका मूल कारण शायद वैज्ञानिक दृष्टि का विकास है और यह दृष्टि किसी सत्य को उसके अन्तिम या चरम रूप में स्वीकार करने से परहेज़ करती है। साहित्य में आधुनिकता का मतलब यह है कि मानव जीवन के तमाम पक्षों पर प्रश्नचिन्ह डालना और समस्याओं का समाधान खोजना। यह प्रक्रिया प्रेमचन्द से लेकर दो परस्पर विरोधी धरातलों पर हिन्दी के कहानिकारों में हो रही है।

नयी कहानी और आधुनिक कहानी के साथ-साथ स्वातंत्र्योत्तर कहानी की एक धारा को 'समकालीन कहानी' की संज्ञा भी दी गयी। समकालीन कहानी जीवन और मानव की सच्चाई की स्वीकृति करती है। उसके बीच से वह व्यक्ति की अस्मिता की खोज करती है। विविध प्रवृत्तियों को आत्मसात करते हुए हिन्दी कहानी ने अनेक कहानिकारों को इस क्षेत्र में प्रदान किया है। उन्होंने कहानी को आम आदमी के जीवन के छोटे-छोटे संदर्भ, वैयक्तिक पहलु तथा उसकी छोटी सच्चाइयों से जोड़ा है जो सामान्यतः अभावों और आकुलताओं से भरे हुए हैं। जीवन और मानव की सच्चाई की स्वीकृति और उसके बीच व्यक्ति की अस्मिता की खोज कहानी का मुख्य विषय बन गया। समकालीन कहानी मिथ्या को तथ्य बनाकर उपस्थित करने का कलात्मक उपकरण है। कहानी समय, समाज, इतिहास तथा जीवन की पुनर्रचना है। कहानी एक भाषिक संरचना भी है। समकालीन कहानियों में भाषा यथार्थ का अनुकरण नहीं करती अपितु भाषा यथार्थ का सृजन करती है। ऐसे कहानिकारों में मेहरुन्निसा परवेज़ का नाम उल्लखनीय है।

मेहरुन्निसा परवेज़ का जन्म मध्यप्रदेश के बलाघाट के बहेला ग्राम में 10 दिसंबर 1944 में हुआ। उनके पिता का नाम अब्दुल हमीद खान और माता का नाम शहजादी बेगम था। उनकी केवल एक ही छोटा भाई है अब्दुल रहीम खान।

मेहरुन्निसा परवेज़ की शादी 30 अक्तूबर 1959 में रऊफ परवेज़ के साथ हुई। वह जिस वातावरण में पली थी उसके एकदम विपरीत वातावरण उन्हें अपने ससुराल में

मिला था। इसलिए उन्होंने तलाक लेकर 18 दिसंबर 1978 में अए.ए.एस अफिसर भगीरथ प्रसाद के साथ दूसरा ब्याह किया। उनको अधिक शिक्षा पाने का मौका नहीं मिला था।

मेहरुन्निसा परवेज़ साहित्य की सभी विधाओं में रचनायें कर रही हैं। यद्यपि उन्होंने उपन्यास और कहानियाँ दोनों लिखे हैं तो भी एक कहानी लेखिका के रूप में वे अधिक लोकप्रिय बनीं। उनकी प्रारंभिक कहानियों में भावुकता और रोमांस ज़्यादा प्रकट हुए हैं जो यथार्थ से भिन्न नहीं हैं लेकिन आगे उन्होंने कुछ उत्तेजनापरक और तेज़ भावुकता पूर्ण कहानियाँ भी लिखी हैं, जिससे नारी लेखन को बहुत सम्मानित मान्यता मिली। वे कहानिकार और उपन्यासकार के रूप में लोकप्रिय बन गयी हैं। उनकी रचनाएँ निम्न लिखित हैं-

कहानी संग्रह - 'आदम और हव्वा', 'टहनियों पर धुप', 'गलत पुरुष', 'फाल्गुनी', 'अन्तिम चढ़ाई', 'अयोध्या से वापसी', 'सोने का बेसर', 'एक और सैलाब', 'ढहत्ता कुतुबमीनार', 'अम्मा', 'समर', 'मेरी बस्तर की कहानियाँ' और 'लाल गुलाब।'

उपन्यास - 'आँखों की दहलीज, उसका घर, कोरजा, अकेला पालाश, समरांगण और पासंग"

महाराजा वीरसिंह जु देव पुरस्कार (1980) साहित्य भूषण सम्मान (1994) सुभद्रकुमारी चौहान पुरस्कार (1994) साहित्य भूषण (1994) भारत के राष्ट्रपति द्वारा पद्मश्री (2004) आदि अनेक पुरस्कारों से मेहरुन्निसा परवेज़ सम्मानित हुए हैं।

हिन्दी कथा साहित्य में मुसलिम मध्यवर्गीय चेतना की कथा-लेखिका के रूप में मेहरुन्निसा का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने बड़ी सरलता और ईमानदारी से जीवन की विविध समस्याओं के यथार्थ को दिखाया है। साथ ही रागात्मकता और भावुकता को भी उन्होंने अपने लेखन का अपरिहार्य तत्व मानकर ग्रहण किया है। उनकी कहानियों में कोमलता, सुन्दरता आदि के लिए उतनी ही जगह है जितनी वास्तविक जीवन में होती है। उन्होंने अपनी

दृष्टि से जीवन को देखा। कहीं पर प्रेम और सौन्दर्य को देखा तो कहीं पर भुख, शोषण और गरीबी को। उनकी रचनात्मकता किसी विचारधारा से दबी न होकर अपना रास्ता खुद चुन लेती है। उन्होंने नारी-जीवन की मर्मस्पर्शी घटनाओं को बड़ी सूक्ष्मता से परखा और अपने साहित्य का मुख्य कथानक बनाया है।

मेहरुन्निसा परवेज़ ने अपनी कृतियों में जहाँ एक ओर सामाजिक मूल्यों की प्रतिष्ठा की है वहीं दूसरी और रूढ़ियों का बहिष्कार भी किया है। वे प्रेम-विवाह, दाम्पत्य जीवन आदि के उत्कृष्ट चित्रण के साथ आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि में समाज को देखा और परखा हैं। इसके साथ उनकी रचनाओं में आदिवासी जीवन के प्रति झुकाव देखा जा सकता है। अतः मेहरुन्निसा परवेज़ की कहानियों में अभिव्यक्त समकालीन स्त्री संकल्पनाओं का शोधपरक विश्लेषण करना समय की माँग बन गयी है। "मेहरुन्निसा परवेज़ की कहानियों में समकालीन" स्त्री संकल्पनायें शीर्षक यह अध्ययन इस दिशा में एक सार्थक प्रयास होगा यही उम्मीद है।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध "मेहरुन्निसा परवेज़ की कहानियों में समकालीन स्त्री संकल्पनायें" चार अध्यायों में विभाजित किया गया है। 'समकालीन हिन्दी कहानी का स्वरूप' शीर्षक प्रथम अध्याय में आधुनिकता और समकालीनता पर विचार करते हुए समकालीन हिन्दी कहानी के विकास पर प्रकाश डाला गया है। तदुपरान्त हिन्दी कहानी का इतिहास, हिन्दी कहानी पर पाश्चात्य प्रभाव, प्राचीन युग, प्रारंभिक युग या भारतेन्दु युग, प्रेमचन्द-प्रसाद युग, स्वातन्त्र्योत्तर युग, नयी कहानी, आधुनिकता और समकालीन कहानी का उल्लेख भी किया गया है। इसके साथ समकालीन कहानिकारों में प्रसिद्ध कमलेश्वर, दूधनाथसिंह, ज्ञानरंजन, मिथलेश्वर, राजेन्द्रयादव, गिरिराज किशोर, मन्नू भण्डारी, दीप्ती खण्डेलवाल, चित्रा मुद्गल, कृष्णा सोबती, शशिप्रभा शास्त्री, निरुपमा सोबती, कृष्ण अग्निहोत्री, मालती जोशी, मैत्रेयी पुष्पा, अरुणा, मंजुल भगत, राजी सेठ और नासिरा शर्मा संक्षिप्त विवरण भी दिया गया है।

इसके बाद मेहरुन्निसा परवेज़ की रचनाओं का परिचय, संक्षिप्त विवरण और चुनी हुई कहानियों का विश्लेषण किया गया है। इस अध्याय के अन्त में यह निष्कर्ष दिया गया है।

मेहरुन्निसा परवेज़ के व्यक्तित्व का प्रभाव उनकी रचनाओं में विद्यमान है सामाजिक कार्यकर्ता होने के नाते इसका असर उनकी रचनाओं में भी स्पष्ट रूप से दृश्यमान होता है। वर्तमान जीवन में बढ़ते हुए अनाचार और आर्थिक विपन्नता का यथार्थ चित्रण लेखिका ने कहानियों एवं उपन्यासों में किया है। उन्होंने दाम्पत्य जीवन के बिखराव को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया है। तीसरे व्यक्ति के आगमन से खोखले होनेवाले रिश्तों की सहज अभिव्यक्ति उनकी कहानियों का मुख्य विषय है। आज की नारी केवल चौके-चूल्हे तक सीमित नहीं है बल्कि वह अपने पुराने संस्कारों और नूतन मूल्यबोधों के साथ जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय है। इस पर आधारित पात्रों को लेखिका ने कहानियों का केन्द्र बनाया है।

'मेहरुन्निसा परवेज़ : जीवन और सृजन' शीर्षक दूसरे अध्याय के प्रथम भाग में मेहरुन्निसा परवेज़ के वैयक्तिक जीवन के विभिन्न आयामों का विस्तृत अध्ययन किया गया है। इसके साथ उनके छह उपन्यासों का संक्षिप्त रूप भी दिया गया है। इस अध्याय में उनके तेरह कहानी-संग्रहों की 87 कहानियों का विस्तृत रूप-रेखा लिखा है। मेहरुन्निसा परवेज़ ने अपनी कहानियों के माध्यम से नारी-मन के अन्दर की समस्याएँ बिना किसी वर्जना के साथ प्रस्तुत किया है। उन्होंने इस तरह जीवन के सत्य को कहानी का सत्य बनाया है। उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से नारी की विवशताओं और समस्याओं के विभिन्न पहलुओं का सच्चा चित्र खींचा है। दूसरा अध्याय इसी ओर संकेत करता है कि उनकी कहानियाँ मुस्लिम समाज में व्याप्त गरीबी और विवशता को दिखाने में सक्षम हैं। उनकी कहानियाँ निम्न लिखित बिन्दुओं पर केन्द्रित हैं कि परिवार में बूढ़ों की दयनीय स्थिति, विधवा नारी का दुःख, बाँझपन की पीड़ा, दाम्पत्य जीवन में तीसरे व्यक्ति का आना, पति के घर में क्षण-क्षण

अपमानित होनेवाली पत्नी, कच्ची उम्र की लड़कियों पर होनेवाले अत्याचार, पत्नी पर होने वाला सन्देह, रिटायरमेंट की त्रासदी, अनब्याही युवती का दर्द, मुस्लिम समाज में नारी की दुर्दशा, बेमेल विवाह, नौकरी करनेवाली अविवाहित नारी का शोषण, बेमेल विवाह, प्रेम की तीव्र संवेदना, माँ की मानसिक यातनाएँ और संपन्न लोगों द्वारा होनेवाला शोषण।

तीसरा अध्याय है - 'मेहरुन्निसा परवेज़ की कहानियों में अभिव्यक्त नारी के विविध रूप।' जिसमें मेहरुन्निसा परवेज़ की कहानियों में अभिव्यक्त नारी के विविध रूप पर विचार किया गया है। नारी के विविध रूपों में पुत्री बहन, प्रेमिका, पत्नी, माँ, विधवा और वेश्या का विश्लेषण किया गया है। इसके साथ वैवाहिक समस्याओं में होनेवाली विवाह पूर्व नारी की दशा, अनब्याही युवतियाँ, काम-काजी युवती का विवाह न होना, प्रेम से संबन्धित अविवाहित युवतियाँ, विवाह पूर्व गर्भधारण और विवाहोत्तर जीवन में प्रेम का अभाव का चित्रण किया गया है। दाम्पत्य जीवन की समस्यायें जैसे अनमेल विवाह, पत्नी पर संदेह, बाँझपन की पीड़ा, नपुंसक पति, सामाजिक एवं कानूनी मान्यता प्राप्त पति, कामकाजी पत्नी को पीड़ित करनेवाले पति, द्विभार्य पति, पति-पत्नी के बीच होनेवाला तलाक, पुनर्विवाह, अन्तर्जातिय विवाह पुत्रि के प्रति होनेवाली पति की वासनात्मक दृष्टि, परस्त्री प्रेम-संबन्ध और टूटते दाम्पत्य जीवन कहानियों में दर्शनीय है। विधवा समस्या में विधवा नारी का शोषण और विधवा विवाह में होने वाले संघर्षों का विवरण किया गया है। विभिन्न रूप की प्रेम संबन्धी समस्याओं में एक पुरुष दो नारी, दो पुरुष एक नारी, नपुंसक प्रेमी, प्रेमी का पालायन, वासना पूर्ति के लिए प्रेम, इसके साथ वेश्या समस्याएँ और शोषण की शिकार होनेवाली नारीयों पर प्रकाश डाला गया है।

कहानियों में नारी की पारिवारिक समस्याओं में विवाहोपरांत परिवार में होनेवाली नारी की विवशता को सबसे अधिक महत्व देखकर प्रस्तुत किया गया है। भारतीय समाज में आदर्श के नाम पर पत्नी को अर्धांगिनी, गृहस्वामिनी एवं सम्माननीय माना गया है, किन्तु

व्यावहारिक रूप में परिवार में उसकी स्थिति अत्यंत दयनीय है। नारी केवल सेवा टहल करनेवाली दासी मात्र है। उसे पूर्णतः सास, ससुर एवं पति की इच्छा के अनुसार चलना पड़ता है। नारी सभी अत्याचार और उत्पीडन को मुक रूप सहती है, परिवार में कई तरह के शोषण के शिकार बन जानेवाली नारियों की सहज अभिव्यक्ति इन कहानियों में देखी जा सकती है। इस अध्याय का निष्कर्ष यह है कि नारी के जीवन में जो प्रश्न उभर आते हैं इसके लिए पुरुष भी कारण बन जाता है। लेकिन लेखिका के मत में पुरुष की सहायता सहारे के बिना स्त्री के अस्तित्व की कल्पना भी असंभव है।

चौथा अध्याय है 'मेहरुन्निसा परवेज़ की कहानियों की रचनात्मक विशेषताएँ।' जिसमें मेहरुन्निसा परवेज़ के कहानी साहित्य की भाषा, शैली और शिल्प विधान का विश्लेषण किया गया है। कहानी की भाषा के अन्तर्गत आए शब्द प्रयोगों में अंग्रेज़ी शब्द, उर्दूशब्द, देशज तथा आंचलिक शब्द, बिम्ब प्रतीक और अलंकार, सूक्तियाँ, ध्वनियाँ, लोकोक्तियाँ, मुहावरे और चित्रोपमता का प्रयोग किया गया है। शैली के अन्तर्गत वर्णनात्मक शैली, विश्लेषणात्मक शैली, आँचलिक शैली, पत्र शैली, आलंकारिक शैली पात्र के चरित्र चित्रण की शैली और प्रतीकात्मक शैली देखी जा सकता है। शिल्प के अन्तर्गत कथानक, शीर्षक का प्रयोग, संवाद, चरित्र, देशकाल एवं वातावरण, भाषा-शैली, उद्देश्य आदि का विश्लेषण किया गया है। इस अध्याय में मेहरुन्निसा परवेज़ की रचनाओं में अनुभूती की अभिव्यक्ति पर बल की गयी है। उनकी कथाओं में घटनाओं के तनाव और परिस्थितियों का संघर्ष है। पूर्व-दीप्ति पद्धति का प्रयोग उनकी कहानियों में प्रचुल मात्रा में हुआ है। इस शैली में कथा-विन्यास को संवेदनात्मक जटिलता और गहराई प्रदान की गयी है। कहानियों का भाषा-शिल्प पर्याप्त रूप में कथागति के अनुकूल है। भाषा का प्रौढ़ और परिष्कृत रूप शैली-वैविध्य एवं बिम्ब-विधान का वैभव मेहरुन्निसा परवेज़ की भाषा की खासियत है। लेखिका ने पात्र और स्थितियों को अंकित करनेवाली महीम भाषा का उपयोग सभी रचनाओं में की है। वातावरण स्थिति और पात्रों के मानसिक संघर्ष को अभिव्यक्त करने के

लिए और उन सबसे पाठकों को आकर्षित करने के लिए कहानियों की भाषा सक्षम है। इस अध्याय में यह बात स्पष्ट है कि कथनी के अनुसार लेखिका की भाषा भी सहज और कहानियों को जीवन्त बनाने में सफल है।

अंत में उपसंहार दिया गया है। उपसंहार इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि मेहरुन्निसा परवेज़ की कहानियाँ समकालीन भारतीय समाज के नारी जीवन का दस्तावेज है। आज की नारी जिन समस्याओं की सामना करती है, वह समस्याएँ मेहरुन्निसा परवेज़ की कहानियों में भी देखने को मिलती हैं। उनकी कहानियों में घटनाओं की बहुलता नहीं होती है और घटनाओं की आकस्मिकता ज़्यादा भी नहीं होती है। सभी कहानियाँ सहज ढंग से और बिना किसी उतार-चढ़ाव से आगे बढ़ती हैं, इससे कहानी पढ़ने के स्थान पर लेखिका के जीवन के साथ सहज यात्रा करने का अनुभव मिलता है। लेखिका ने नारी मन की गहराई में जाकर उनके अनछुए पक्षों को उजागर किया है। यह उनकी कहानियों की सच्चाई है।

मेहरुन्निसा परवेज़ की सृजन-क्षमता केवल नारी जीवन तक सीमित न रहकर जीवन की समग्रता को पूर्ण रूप से प्रकट करनेवाली है। वे अपने कथासाहित्य में तत्कालीन मानव का चित्रण इसलिए करती है कि वह मानव जीवन पर वे समग्र एवं व्यापक दृष्टि हमेशा डालती हैं। विवशता, पीडा, मानसिक-दुःख और असुरक्षित जीवन जीते हुए भी उनके सभी नारी-पात्र व्यवस्था की मोहरा बनकर समझौते करने के लिए तैयार हैं। साथ-ही-साथ वे कभी विद्रोह और कभी मानवी बनकर स्नेह की छाया देकर एक नवीन संस्कार भी करते हैं। मेहरुन्निसा परवेज़ की कहानियों को सही ढंग से समझने और समकालीन परिस्थितियों में उनकी उपादेयता को परखने की दृष्टि से प्रस्तुत अध्ययन "मेहरुन्निसा परवेज़ की कहानियों में समकालीन स्त्री संकल्पनायें" सार्थक सिद्ध होगा, यही उम्मीद है। नारी चरित्र लेखन में मेहरुन्निसा परवेज़ जैसी कहानीकार की रचनाधर्मिता को परखने के लिए यह अध्ययन पृष्ठभूमि है, जो शोध की अनन्त संभावनाएँ जगाने में भी सहायक होगी।

Name of the Institution where the Research Programme will be under-taken	:	Department of Hindi Maharaja's College Ernakulam
Name and Signature of the Research Student	:	**NEETHU P.R**

NAME OF THE RESEARCH TOPIC

MEHRUNNISA PARVEZ KI KAHANION MEIN SAMKALIN STRI SANKALPANAYEN

मेहरुन्निसा परवेज़ की कहानियों में समकालीन स्त्री संकल्पनायें

Name and Signature of the Research Supervising Teacher

Dr. K. MOHANAN PILLAI
Associate Professor in Hindi
M.A. College
Kothamangalam
(Research Supervising Teacher
Dept. of Hindi
Maharaja's College, Ernakulam)